Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

भारत-चीन संबंध: अवसर और चुनौतियाँ

विपुला, सहायक प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग,
फ़तेह चंद महिला महाविद्यालय, हिसार(हरियाणा)

भारत-चीन संबंध जिसे चीन-भारत संबंध भी कहा जाता है, द्विपक्षीय संबंध है यानी दो संप्रभु राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों का संगठन। हाल के समय में यह रिश्ता मधुर रहा है, फिर भी यह कई कारकों से गुजरा है जो वर्तमान रिश्ते को जन्म देते हैं। इन दोनों देशों के बीच सीमा विवाद के साथ-साथ आर्थिक प्रतिद्वंद्विता भी रही है जिसके कारण रिश्ते तनावपूर्ण हो गए हैं।

चीन के साथ औपचारिक संबंध समाप्त करने वाले देशों में से एक बन गया। [1]। 1962, 1967 और 1987 में देशों के बीच तीन सैन्य विवाद सीमा विवाद का परिणाम हैं। दो राष्ट्र. चीन से निकलने वाली ब्रह्मपुत्र नदी भी विवाद का एक कारण है क्योंकि दोनों देशों के बीच जल प्रतिशत बंटवारे को लेकर असंतोष है लेकिन वर्तमान समय में इसे ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता है और यह निकट भविष्य में विवाद का एक बड़ा कारण बन सकता है। यदि इसका समाधान नहीं हुआ।[2]

संबंधों के बावजूद भारत और चीन को कई समस्याओं से निपटना है .. सीमा विवाद को सुलझाने में दोनों देशों के असफल रवैये के कारण दोनों तरफ से सेना की घुसपैठ हो रही है हालिया मामला डोकलाम गतिरोध का था जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों ने सीमाओं पर लगातार सैन्य बुनियादी ढांचे की स्थापना की है।

भारत चीन और पाकिस्तान के मजबूत रणनीतिक द्विपक्षीय संबंधों को लेकर भी सशंकित है। चीन विवादास्पद दक्षिण चीन सागर में भारतीय सैन्य और आर्थिक गतिविधियों को लेकर सतर्क है। [3]

भारत और चीन के वर्तमान संबंध उन ऐतिहासिक कारकों का परिणाम हैं जो देशों के द्विपक्षीय संबंधों को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। अन्य विवादों में परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता का चीन का विरोध , मसूर अज़हर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने में चीन द्वारा वीटो का उपयोग और चीन की वन बेल्ट वन रोड पहल शामिल है जिसके कारण डोकलाम संकट पैदा हुआ। [4]

साहित्य की समीक्षा

इस विषय पर बड़ी मात्रा में लेख उपलब्ध हैं और इस पर विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई बहुत सारी किताबें हैं। शोधकर्ता ने शोध पत्र लिखने के लिए विभिन्न पुस्तकों, लेखों, ब्लॉगों के साथ-साथ समाचार पत्रिकाओं का भी संदर्भ लिया है। हालाँकि इस पर कई किताबें लिखी गई हैं फिर भी उनमें से कई ऑनलाइन उपलब्ध नहीं थीं।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

शोधकर्ता द्वारा संदर्भित पुस्तक अन्नुपूर्णा द्वारा लिखित समकालीन युग में भारत-चीन है नौटियाल और चिंतामणि महापात्रा। यह वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ था। यह हमें समकालीन परिवेश में भारत और चीन की एक झलक देता है और पिछले कुछ वर्षों में भारत-चीन के संबंध कैसे बढ़े हैं और इसके क्या कारण हैं। यह हमें उन विभिन्न कारकों के बारे में भी बताता है जिन्होंने रिश्ते में प्रमुख भूमिका निभाई है।

डॉ. चंद्र भूषण नागर का लेख, "China-India Relations and North-East: An Overview" शोध पत्र लिखने में सबसे उपयोगी लेख था क्योंकि यह भारत और चीन यानी भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के बीच संघर्ष का प्रमुख कारण बताता है। यह दोनों देशों के बीच एक भौगोलिक संघर्ष है। भारत का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र जिसमें सात बहनें शामिल हैं, चीन से घिरा हुआ है, भारत के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह भारत को अपनी पूर्व की ओर देखो नीति के लिए मार्ग प्रदान करता है।

चेन जियान का लेख, जिसका शीर्षक है, "China and the first Indo-China War" हमें भारत-चीन युद्ध के बारे में सभी आवश्यक विवरण देता है। यह हमें उन विभिन्न कारकों के बारे में बताता है जो युद्ध का कारण बने और इसके परिणाम क्या थे। युद्ध ने दोनों देशों के बीच गहरा संदेह पैदा कर दिया। युद्ध की समाप्ति के परिणामस्वरूप जिनेवा समझौते पर हस्ताक्षर हुए लेकिन दोनों देशों के बीच टकराव अभी खत्म नहीं हुआ था।

चिएटिग्ज का लेख बाजपेयी का शीर्षक, "China-India Regional Dimensions of the Bilateral Relationship" हमें दोनों देशों द्वारा हस्ताक्षरित द्विपक्षीय समझौतों का एक सिंहावलोकन देता है। यह हमें विकसित हो रहे चीन-भारत संबंधों के बारे में भी एक जानकारी देता है।
लेख में दोनों देशों के बीच विवादित सीमा का भी जिक्र किया गया है. दोनों देशों के बीच सुरक्षा दुविधा का समुद्री क्षेत्र पर भी प्रभाव पड़ा है और समुद्री हित और क्षमताओं का विस्तार कैसे हो रहा है, इस पर भी लेख में चर्चा की गई है। कुछ अन्य लेख हैं जिनका शोधकर्ता ने उल्लेख किया है और उनका उल्लेख ग्रंथ सूची में किया गया है। जो शोध पत्र के अंत में दिया गया है।

अनुसंधान उद्देश्य

- भारत और चीन के रिश्ते को ऐतिहासिक नजरिये से देखना।
- दोनों देशों के बीच विवाद के विभिन्न कारकों का विश्लेषण करना।
- ये देखने के लिए कि क्या भारत और चीन के रिश्तों में कोई बदलाव आया है।
- यह देखने के लिए कि भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए क्या किया जा सकता है।

परिकल्पना

भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंध उन ऐतिहासिक कारकों का परिणाम हैं जो दोनों देशों में प्रचलित हैं और पाकिस्तान दोनों देशों के संबंधों को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। संघर्ष के प्रमुख कारक सीमा विवाद,

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

दोनों देशों के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्धा, दक्षिण चीन सागर में भारत का हस्तक्षेप और पाकिस्तान के साथ चीन के मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। दोनों देशों के बीच सैन्य गतिविधियों को लेकर भी संदेह बना हुआ है।

प्रश्न का अनुसंधान

1. क्या पाकिस्तान भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित कर रहा है?
2. क्या वाकई भारत और चीन के द्विपक्षीय रिश्ते सुधर रहे हैं?

अध्यायीकरण

अनुसंधान परियोजना को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों और उनके इतिहास से संबंधित है। इसमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से चीन-भारत संबंधों पर चर्चा की गई। दूसरा अध्याय दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के वर्तमान परिदृश्य से संबंधित है और उन विभिन्न कारकों पर भी चर्चा करता है जिन्होंने इस रिश्ते को सकारात्मक और नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है। तीसरा अध्याय उन चीजों से संबंधित है जो इस द्विपक्षीय संबंध को बढ़ाने के लिए की जानी चाहिए। तीनों अध्यायों के अंत में निष्कर्ष है। अंत में, ग्रंथ सूची है।

भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों का इतिहास

भारत और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना भौगोलिक दृष्टि से एशिया महाद्वीप में स्थित हैं और इसके दक्षिणी भाग में हैं। दोनों देशों की दक्षिण एशियाई राजनीति के साथ-साथ विश्व राजनीति में भी प्रमुख भूमिका है और दोनों को महाशक्ति राष्ट्र माना जाता है। प्रारंभ में, दोनों देशों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध थे और एक-दूसरे के साथ भाईचारे का रिश्ता भी था। इस बंधन को मजबूत करने के लिए "हिंदी- चीनी भाई- भाई " जैसे नारे भी लगाए गए, जिसका अर्थ था कि भारतीय और चीनी भाई-भाई हैं।

दोनों देशों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों, पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जो न केवल दुनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले देशों के बीच दोस्ती के प्रतीक के रूप में कार्य करता है, बल्कि विकासशील दुनिया के भीतर बातचीत की प्रक्रिया को भी संहिताबद्ध करता है । और क्षेत्रीय संपर्क के बाद के मानदंडों, जैसे कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संघ की मित्रता और सहयोग संधि, का पूर्ववर्ती बन गया। [5]इसमें प्रत्येक देश की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप न करना शामिल था[6]।

दोनों देशों के बीच भाईचारे के रिश्ते में तनाव पैदा करने वाली मुख्य समस्या तब थी जब भारत ने तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा को शरण दी थी, जिन्हें तिब्बती विद्रोहियों और चीनी सैनिकों के बीच गुरिल्ला युद्ध के बाद चीनियों द्वारा गिरफ्तार किया जाना था क्योंकि उन पर संदेह था। चीनी सरकार के विरुद्ध राष्ट्र-विरोधी कार्यकर्ता को कार्यान्वित करना ।[7]

पंचशील संधि के एक नियम को तोड़ दिया और यह दोनों देशों के बीच दुश्मनी की शुरुआत थी। भारत को चीनी सरकार द्वारा ठगा हुआ महसूस हुआ और यही उस संदेह की शुरुआत थी जो आज भी कायम है। इसका दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों पर भारी असर पड़ा और इसका असर अभी भी महसूस किया जा सकता है। [8] इस घटना के बाद, नेहरूवादी सरकार को आंतरिक और बाहरी दोनों तरह से कई चेतावनियाँ दी गईं कि चीन इसका बदला लेने के लिए भारत पर युद्ध की घोषणा कर सकता है। चीनी सेना सीमा के बहुत करीब आ गई थी फिर भी

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

सरकार को भरोसा था कि सेना हमला नहीं करेगी लेकिन चीन ने भारत पर युद्ध की घोषणा कर दी और भारतीय सेना इसके लिए तैयार भी नहीं थी और बहुत बुरी तरह हार गई। इससे उस सरकार को सबक मिला जिस पर से लोगों का विश्वास उठ गया था और घरेलू नेताओं को काफी शर्मिंदगी उठानी पड़ी।

कई कैबिनेट मंत्रियों ने अपना इस्तीफा दे दिया क्योंकि इस घटना से देश भर में अविश्वास पैदा हो गया था। यह विवाद अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश सीमा क्षेत्र को लेकर था। इस हार से नेहरू की प्रतिष्ठा पर असर पड़ा और विरोधी पार्टी के नेताओं की ओर से भी काफी आलोचना हुई. [9]

दोनों देशों के बीच युद्ध के बाद पूरी तरह से गतिरोध आ गया था और नवंबर 1962 में राजीव गांधी की चीन यात्रा तक दोनों देशों के रिश्ते में सुधार नहीं हुआ, जिससे दोनों देशों के राजनयिक संबंध फिर से शुरू हुए। यह यात्रा 1956 में प्रधान मंत्री झोउ एनलाई के भारत दौरे के लगभग 32 साल बाद थी। दोनों देशों के बीच सीमा मुद्दे पर आमने-सामने बात करने के लिए। राजनयिक संबंधों की बहाली के साथ, दोनों देशों के संबंधों में धीरे-धीरे सुधार हुआ। [10]

चीन-पाकिस्तान संबंध शुरू से ही भाईचारे वाले रहे हैं क्योंकि इसने ताइवान मुद्दे पर चीन का समर्थन किया था और पाकिस्तान को अमेरिका द्वारा हथियारों की आपूर्ति भी की गई थी क्योंकि भारत के सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध थे और गुटनिरपेक्ष आंदोलन पर उसका रुख था। चीन और अमेरिका दोनों ने इसकी सराहना नहीं की, इसलिए उन्होंने दक्षिण एशिया में पाकिस्तान को अपने गठबंधन के रूप में बनाने का फैसला किया और इसे सशक्त बनाया[11]।

यह भारत के लिए बहुत समस्याग्रस्त था क्योंकि अगर पाकिस्तान सत्ता में बढ़ता तो यह कश्मीर समस्या के लिए एक मुद्दा होता और भारत राज्य पर अपनी पकड़ ढीली कर देता। चीन और पाकिस्तान की भारत से साझा दुश्मनी भी चीन और पाकिस्तान के दोस्ताना रिश्ते का एक बड़ा कारण है. भारत और चीन के इस द्विपक्षीय रिश्ते में पाकिस्तान हमेशा से ही प्रभावशाली रहा है। [12]

दोनों देशों के बीच टूटे रिश्ते शीत युद्ध के दौर में थे, जो देशों के द्विपक्षीय संबंधों को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कारक बन गया। वारसॉ और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के देश एक-दूसरे के करीब नहीं थे और दूसरे संधि के देशों को दुश्मन मानते थे। हालांकि भारत दोनों का हिस्सा नहीं था और एनएएम का पालन करता था (भारत एनएएम का संस्थापक सदस्य था) यूएसएसआर के साथ घनिष्ठ संबंध था और उसने इसके साथ एक मैत्री संधि पर भी हस्ताक्षर किए, जिसे भारत द्वारा यूएसएसआर के पक्ष में माना गया। यह एक तरह से भारत और चीन के रिश्ते के बाद भी है क्योंकि चीन नाटो संधि का हिस्सा था और अमेरिका के साथ था।[13]

दोनों देशों के बीच विवाद के विभिन्न कारक और वर्तमान परिदृश्य द्विपक्षीय संबंध

दोनों देशों के बीच मुद्दों की एक कभी न खत्म होने वाली सूची है और रिश्ते को आमतौर पर प्रतिस्पर्धी या सहकारी प्रकृति के रूप में देखा जाता है। देशों के द्विपक्षीय संबंध बातचीत और व्यवधान की अवधि के बीच झूलते रहते हैं जो एक सतत चक्र है। लेकिन शांति बनाए रखने के लिए बातचीत एक मुख्य कारक है[14]।

यह दोनों देशों के बीच खतरे की धारणाओं के बुनियादी बेमेल के कारण और बढ़ गया है, जो शक्ति के बदलते संतुलन और द्विपक्षीय संबंधों में विरोधाभासी संकेतों में निहित है। इसके अलावा, प्रमुख शक्तियों के रूप में दोनों देशों के उदय ने उन्हें एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए नए उपकरण और मंच प्रदान किए हैं, जिससे भारत-चीन संबंधों को द्विपक्षीय से क्षेत्रीय स्तर तक फैलाने में मदद मिली है। [15]

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

हाल के दिनों में दोनों देशों की सैन्य क्षमताएं बढ़ रही हैं क्योंकि दोनों ही एक-दूसरे पर संदेह करते हैं और देश के बजट का एक बड़ा हिस्सा सेना को बढ़ाने में जाता है और साथ ही हथियार भी बढ़ रहे हैं।[16]

दोनों देश परमाणु संपन्न हैं और उनके पास कई परमाणु हथियार हैं और यही एक कारण है कि समकालीन युग में, दोनों देशों के बीच शीत युद्ध कभी भी गर्म युद्ध में नहीं बदला क्योंकि बड़े पैमाने पर हथियारों के कारण दोनों पक्षों को नुकसान हुआ। विनाश इतना भयानक होगा कि विजेता घोषित करना असंभव होगा और नुकसान की भरपाई करने में वर्षों लग जायेंगे। देश अपने परमाणु हथियार बढ़ा रहे हैं जिससे दोनों के बीच हथियारों की होड़ भी पैदा हो गई है जो न केवल दो देशों बल्कि पूरी दुनिया की आबादी के लिए सुरक्षित नहीं हो सकती है।

परमाणु हथियार की मौजूदगी का मतलब है कि अगर कुछ परिस्थितियों में, कोई गलती से या शरारत पैदा करने के लिए दूसरे पर परमाणु हथियार चला देता है, तो इससे दुनिया का अंत हो जाएगा क्योंकि विनाश ऐसा होगा।[17] भले ही देश अपनी सैन्य शक्ति का विस्तार कर रहे हैं, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि पड़ोसी होने के नाते दोनों को एक-दूसरे पर नज़र रखनी चाहिए और नए सैन्य विकास के बारे में जानकारी साझा करनी चाहिए क्योंकि इससे सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने में भी मदद मिलेगी।

औपनिवेशिक शासकों से भारत की आजादी के बाद से नए देशों के बीच सीमा संबंधी समस्याएं मौजूद हैं और यह आपसी अविश्वास का मूल कारण है और अभी भी दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों में एक कांटा है। चीन ने भारत के साथ मौजूदा 29 विवादों में से 17 को सुलझा लिया है लेकिन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर अभी तक कोई आपसी सहमति नहीं बन पाई है क्योंकि चीनी मानचित्र के अनुसार, अरुणाचल प्रदेश और पूर्वी भारत के कुछ अन्य हिस्से इसका हिस्सा हैं। चीनी क्षेत्र। पूर्वी राज्यों की आबादी, जिन्हें चीन अपने क्षेत्र का हिस्सा मानता है, को चीन में प्रवेश करने के लिए वीज़ा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। लद्दाख के अक्साई चिन क्षेत्र को लेकर विवाद हो गया है. हाल के वर्षों में क्षेत्रीय विवादों पर आक्रामक रुख के कारण शक्ति संतुलन चीन की ओर झुकता देखा गया है।

दक्षिण एशिया के कई देश चीन का पक्ष ले रहे हैं क्योंकि वे भारत को एक क्षेत्रीय दबंग देश मानते हैं जो देशों के आंतरिक विवादों में हस्तक्षेप करता है। हालाँकि दक्षिण एशिया के राष्ट्र आधिकारिक तौर पर भारत या चीन में से किसी एक का साथ नहीं चुनते हैं क्योंकि उन्हें दोनों देशों के बीच राजनीतिक और आर्थिक प्रतिस्पर्धा से लाभ प्राप्त हुआ है[18]।

सीमा विवाद के अलावा दोनों देशों से होकर गुजरने वाली नदियों के जल बंटवारे पर भी असहमति बनी हुई है. इनमें मुख्य है ब्रह्मपुत्र, जो चीन से निकलती है, जिसे सांगपो (जिसका अर्थ है शुद्ध करने वाली) के नाम से जाना जाता है, देशों में जल विवाद का एक प्रमुख स्रोत बन गई है। यह भारत और चीन दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण ताजे पानी का स्रोत है[19] लेकिन नदी जल के बंटवारे पर अभी तक सहमति नहीं बनी है।

चीन ने भारत की अनुमति के बिना नदी पर बांधों का निर्माण किया है और अगर उसने किसी दिन बांध से पानी छोड़ने का फैसला किया, तो भारत का पूरा पूर्वी राज्य पानी के नीचे का राज्य बन जाएगा। इस मुद्दे को हाल के दिनों में कोई खास तूल नहीं मिला है और निकट भविष्य में यह गंभीर रूप ले सकता है। जनसंख्या और कृषि जैसे कारकों को देखकर देशों को पारस्परिक रूप से यह तय करना चाहिए कि पानी का कितना प्रतिशत उन दोनों के लिए पर्याप्त होगा। [20]

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

दोनों सरकारें एक-दूसरे को जो विरोधाभासी संकेत भेज रही हैं, उनके कारण द्विपक्षीय संबंधों की जटिलताएँ भी बढ़ रही हैं। चीन और भारत दोनों के पास वर्तमान में मजबूत नेता हैं जिससे देशों की विदेश नीतियों के टकराव की संभावना अधिक है। नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग दोनों ही अपने-अपने देशों को विकसित देश बनाने के इच्छुक हैं और इसलिए दोनों नेताओं ने अपने-अपने देशों की राजनयिक यात्राएं की हैं। [21]

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपना एक साल का कार्यकाल पूरा होने से पहले ही चीन का दौरा किया, जिससे पता चलता है कि भारत और चीन के रिश्ते बेहद अहम हैं. दोनों देशों में बढ़ता राष्ट्रवाद भी चर्चा का विषय बन गया है. दोनों देशों के बीच खतरे की धारणा का बेमेल होना भी है क्योंकि जिस तरह से चीन भारत के रडार पर आता है वह उस तरह से नहीं है जिस तरह से भारत चीन के रडार पर है क्योंकि भारत चीन के अधिक हिस्से को कवर करता है लेकिन चीन का मुख्य फोकस अभी भी है दक्षिण एशियाई राजनीति में संयुक्त राज्य अमेरिका की उपस्थिति पर। [22]

इस द्विपक्षीय रिश्ते में पाकिस्तान एक महत्वपूर्ण कारक है। चीन पाकिस्तान को हथियारों के साथ-साथ परमाणु तकनीक का आपूर्तिकर्ता है जो भारत के सभी शहरों पर हमला करने की क्षमता रखता है। इसे चीन का लगातार समर्थन प्राप्त है। चीन ने पाकिस्तान को लड़ाकू विमान भी मुहैया कराए हैं. इस रिश्ते का एक मुख्य कारण पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में चीन की मौजूदगी है ।

काराकोरम राजमार्ग उन परियोजनाओं में से एक है जिसे चीन और पाकिस्तान ने पीओके के माध्यम से विकसित करने का निर्णय लिया है । यह चीन के लिए बेहद फायदेमंद होगा क्योंकि खाड़ी क्षेत्र से परिवहन में यह बहुत रणनीतिक होगा। उत्तरी क्षेत्र में जल-विद्युत परियोजनाओं के विकास के लिए चीन और पाकिस्तान के बीच समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए हैं। पीओके में ढांचागत विकास भी हो रहा है . चीनी सरकार सैन्य क्षमताओं के साथ पीओके के बुनियादी ढांचे को विकसित करने के अलावा कश्मीरी और पाकिस्तानी अलगाववादियों को भी समर्थन देती है और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा जिहादी संगठनों पर प्रतिबंध की भी निंदा करती है। [23]

आतंकवाद का मुद्दा तीनों देशों यानी भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच आम रहा है लेकिन इस पर कोई आम रुख नहीं रहा है। चीन केवल राष्ट्रीय हित के लिए अपनी आतंकवाद विरोधी रणनीति में पाकिस्तान का समर्थन करता रहता है और इसके चलते भारत को अपने पश्चिमी पड़ोसी से सीमा पार आतंकवाद का शिकार होना पड़ता है।

चीन ने पाकिस्तान में होने वाली राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों की निंदा नहीं की है और मसूर अज़हर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने के अन्य देशों के प्रयास को विफल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपनी वीटो शक्ति का उपयोग करता है। चीन भारत के संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) दोनों का हिस्सा बनने के भी खिलाफ है। [24]

भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों के नकारात्मक पक्ष के अलावा सकारात्मक पक्ष भी हैं। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बनकर उभरा है। इसके बाद दोनों देशों के समुद्री हितों और क्षमताओं में वृद्धि हुई है। आयात और निर्यात को लेकर दोनों देशों के बीच निर्भरता है और दोनों देश मिलकर दुनिया के सबसे बड़े द्विपक्षीय व्यापार में से एक हैं।[25]

दोनों देशों के बीच रक्षा प्रतिनिधिमंडलों का भी आदान-प्रदान हुआ है। हालाँकि स्टेपल्ड वीज़ा के मुद्दे ने दोनों देशों के बीच एक समस्या पैदा की, लेकिन इससे ज़्यादा समस्या नहीं हुई और सान्या में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में इसे

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

सुलझा लिया गया। ऐसे मुद्दों को पीछे छोड़ दिया गया और चीनी विश्लेषक ने दोनों देशों के बीच रक्षा संबंधों की बहाली का स्वागत किया।

दोनों देशों में संयुक्त सैन्य अभ्यास भी हुए हैं और इस अभ्यास का मुख्य फोकस आतंकवाद विरोधी प्रशिक्षण था। दोनों देशों के बीच वार्षिक रक्षा वार्ता भी होती है. हाल के दिनों में राजनयिक यात्राओं में वृद्धि हुई है क्योंकि यह सौहार्दपूर्ण संबंधों के साथ-साथ निरंतर बातचीत के महत्व पर जोर देती है। [26]

द्विपक्षीय संबंध बढ़ाने के तरीके

भारत-चीन संबंधों के रुख पर, कई लोगों का मानना है कि इसमें सुधार हो रहा है, जबकि अन्य का तर्क है कि यह अभी भी वैसा ही है और इस संबंध में कोई बड़ा सकारात्मक बदलाव नहीं हुआ है। इस बारे में कोई औपचारिक निष्कर्ष बयान नहीं आया है। दोनों नेताओं, नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग के बीच वुहान शिखर सम्मेलन ने बहुत भ्रम पैदा कर दिया है कि क्या यह सफल था या नहीं क्योंकि सफलता केवल शब्दों के वादों पर नहीं बल्कि कार्यों पर निर्भर करती है। [27]

लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट है कि चीन को अपनी जीडीपी बढ़ाने के लिए एक व्यापार भागीदार के रूप में भारत की आवश्यकता है और वह इसे खोना बर्दाश्त नहीं कर सकता क्योंकि इससे देश की जीडीपी में भारी गिरावट आएगी। [28] वुहान शिखर सम्मेलन ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि दोनों देशों का एक-दूसरे के खिलाफ टकराव का कोई इरादा नहीं है और वे दोनों इस द्विपक्षीय रिश्ते में पैदा हुई गलतफहमियों को दूर करने के इच्छुक हैं। [29]। इस रिश्ते को और आगे बढ़ाने के लिए, कुछ ऐसे कदम हैं जो दोनों पक्षों द्वारा पारस्परिक लाभ के लिए उठाए जा सकते हैं।

इस संघर्ष का मूल कारण जो सीमा विवाद साबित हुआ है, उसे दोनों देशों के बीच स्पष्ट करने की जरूरत है। दोनों देश अपने प्रतिनिधियों को चर्चा की अध्यक्षता करने के लिए भेज सकते हैं जो इस मामले को प्राथमिक चिंता के रूप में लेंगे और इसके लिए समाधान निकालेंगे क्योंकि इसे आगे जारी नहीं रखा जा सकता क्योंकि यह न केवल सरकारों के लिए बल्कि देश के लोगों के लिए भी विघटनकारी होगा। संबंधित क्षेत्र भी इसे जितनी जल्दी सुलझा लिया जाए, दोनों देशों के लिए उतना ही बेहतर होगा[30]। संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतरराष्ट्रीय सरकारी संस्था से भी सहायता ली जा सकती है क्योंकि इससे बैठक के सुचारू संचालन का आश्वासन मिलेगा। बैठक का मुख्य एजेंडा मुद्दे का समाधान करना होना चाहिए. [31]

दोनों देशों की सीमाओं पर शांति बनाए रखने की भी जरूरत है. शांति तंत्र अस्थायी प्रकृति का नहीं बल्कि दीर्घकालिक समाधान वाला होना चाहिए। इसकी शुरुआत भारत और चीन द्वारा साझा की गई सीमाओं के स्पष्ट सीमांकन से होगी और उल्लंघन के मामले में, दोनों देशों द्वारा सर्वसम्मति से नियम स्पष्ट रूप से निर्धारित किए जाने चाहिए।[32] इससे डोकलाम गतिरोध जैसे सीमा तनाव में कमी आएगी जो काफी जटिल था और देश के सकारात्मक द्विपक्षीय संबंधों में बाधा साबित हुआ था।[33]

एक और समस्या जिस पर ध्यान देने की जरूरत है वह है आर्थिक मोर्चा क्योंकि उनके सकारात्मक संबंधों की संभावना अधिक है, लेकिन अभी तक प्रदर्शन काफी नीचे है। ध्यान का तात्कालिक क्षेत्र व्यापार संतुलन का है जो भारत के प्रति अत्यधिक पक्षपाती है। लेकिन कई भारतीय उत्पाद जैसे फार्मास्यूटिकल्स, आईटी उत्पाद और गैर-बासमती चावल चीनी बाजार से अवरुद्ध हैं। चीन को भारतीय वस्तुओं के लिए अपने बाजार खोलने की जरूरत है। [34]

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

पाकिस्तान से उत्पन्न होने वाले आतंकवाद की समस्या पर चीन के साथ-साथ भारत दोनों का मुख्य ध्यान होना चाहिए और चीन, हालांकि पाकिस्तान के साथ भाईचारे का रिश्ता रखता है , इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं कर सकता है कि वह दुनिया में कई सर्वाधिक वांछित आतंकवादियों को पनाह देता है जो मास्टरमाइंड रहे हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में होने वाली अधिकांश आतंकवादी गतिविधियों के पीछे यही कारण है।

चीन को आतंकवाद पर स्टैंड लेना चाहिए और आतंकवाद से लड़ने में दूसरे देशों की मदद करनी चाहिए. वह पाकिस्तान को उसके आतंकी उद्यम में मदद नहीं कर सकता। चीन मसूर अज़हर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अन्य सदस्यों की मुहिम को रोककर इसकी शुरुआत कर सकता है। [35]

दोनों देशों के पास राजनयिक संबंधों का एक तंत्र भी होना चाहिए जहां दोनों पड़ोसी देशों जैसे म्यांमार, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, मालदीव और श्रीलंका और दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के अन्य देशों के साथ क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा कर सकें। वर्तमान बहुध्रुवीय दुनिया में चीन और भारत दोनों महाशक्तियाँ हैं और वे मिलकर दक्षिण एशिया के देशों के लिए एक मंच बना सकते हैं जहाँ वे अपनी शिकायतें लेकर आ सकते हैं। इससे दोनों देशों के रिश्ते और मजबूत होंगे। [36]

सैन्य संघर्ष क्षेत्र में दोनों देशों को एक दूसरे के बीच संदेह कम करना चाहिए और एक दूसरे को विश्वास में लेना चाहिए. यह शीर्ष सैन्य नेताओं की नियमित यात्राओं के माध्यम से किया जा सकता है जहां वे सेना द्वारा की गई नई सैन्य पहलों पर चर्चा कर सकते हैं। वार्षिक सैन्य अभ्यास और रक्षा प्रतिनिधिमंडलों का आदान-प्रदान होना चाहिए।[37]

अंत में, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक और सैन्य समाधानों के अलावा, देशों की संस्कृतियों को एक दूसरे के साथ साझा करना चाहिए। यह पारंपरिक उत्सव आयोजित करके किया जा सकता है जिससे लोगों को दूसरे देशों के बारे में जानकारी मिल सके। उत्सव का आयोजन देश के सांस्कृतिक मंत्रियों के सहयोग से किया जा सकता है।

इसके अलावा, दोनों देशों के सिनेमाघर मिलकर भारत और चीन के बारे में फिल्में बना सकते हैं, जिसमें दोनों देशों के सुपरस्टार अभिनय कर सकते हैं, इससे अधिक दर्शक आकर्षित होंगे। कुंग फू योग चीन-भारत सांस्कृतिक आदान-प्रदान को मजबूत करने में एक सकारात्मक मील का पत्थर था। दोनों देश सहयोग के दस स्तंभों को बढ़ाने पर भी सहमत हुए हैं। [38]

निष्कर्ष

भारत-चीन संबंध 1950 के दशक से बहुत उतार-चढ़ाव भरे रहे हैं और मित्रता के चरण से शत्रुता और मित्रता तक चले गए हैं। दोनों देशों में पैदा हुए विवादों का दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है, लेकिन यह देखा जा सकता है कि तमाम कारकों के बावजूद, यह पिछले कुछ वर्षों में स्थिर रहा है और कई क्षेत्रों में सुधार हो रहा है।

सैन्य क्षेत्र में, हालाँकि सीमाओं पर शांति है जो हाल के वर्षों में हासिल हुई है, सीमा पर घुसपैठ की घटनाओं के परिणामस्वरूप दोनों देशों के सैन्य व्यय में वृद्धि हुई है । दोनों देशों के बीच विश्वास संबंधी मुद्दे रहे हैं जिससे सुरक्षा संबंधी दुविधा पैदा हुई है और इसलिए दोनों देशों के बीच हथियारों की होड़ मची हुई है।

चीन-पाकिस्तान संबंध, जो बहुत भाईचारे वाला है, ने भारत और चीन के संबंधों को तय करने में एक आदिम भूमिका निभाई है क्योंकि वर्तमान बहुध्रुवीय दुनिया में, पाकिस्तान को देश के भीतर होने वाली आतंकवादी

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

गतिविधियों के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका के विरोध का सामना करना पड़ा है और इसलिए यह चीन के साथ पक्ष. भारत के संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध हैं और यही दोनों देशों के बीच संघर्ष का कारण रहा है। पाकिस्तान को चीन का समर्थन प्राप्त है और चीन उसे हथियारों से लैस कर रहा है जो भारत के साथ-साथ संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों के लिए बहुत खतरनाक है। चीन अक्सर भारत और पाकिस्तान के बीच शीत युद्ध का फायदा उठाता रहा है। कश्मीर, जो भारत-पाकिस्तान संबंधों में एक मुद्दा है, चीन के लिए भी अपनी रणनीतिक प्रासंगिकता के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि चीन-भारत संबंधों को निर्धारित करने में पाकिस्तान एक केंद्रीय कारक है।

दोनों देशों के बीच मौजूद सभी विवादास्पद कारकों के बावजूद, चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनकर उभरा है। हाल के दिनों में दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा है. दोनों देशों के बीच शिखर सम्मेलन और राजनयिक दौरे दोनों देशों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने में सफल रहे हैं।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे दोनों देशों के रिश्तों को बेहतर बनाया जा सकता है। व्यवधान की बजाय बातचीत पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि निरंतर बातचीत दोनों देशों के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। भारत को घरेलू नीति पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए क्योंकि यह अंततः देश को मजबूत बनाएगा इसलिए संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। अंत में, पिछले पाठों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

ग्रन्थसूची

1. Chietigj Bajpaee, "China-India: Regional Dimensions of the Bilateral Relationship" (2015)
2. Sonali Mittra, 'The Brahmaputra conundrum' The Hindu (December 04, 2017)
3. Jeff M. Smith, "The China-Indian Border Brawl" Wall Street Journal Asia (July 10, 2015)
4. Rajeswari Pillai Rajagopalan, 'Are China-India Relations Really Improving?' The Diplomat (March 1, 2018)
5. Jean Francois Huchet and N Jayaram, 'Emergence of a Pragmatic India-China Relationship: Between Geostrategic Rivalry and Economic Competition' (2008)
6. NCERT, "Contemporary World Politics" (Edn 2007)
7. Jennifer Latson, "How and Why the Dalai Lama left Tibet" (March 17, 2015)
8. Jean Francois Huchet and N Jayaram, 'Emergence of a Pragmatic India-China Relationship: Between Geostrategic Rivalry and Economic Competition' (2008)
9. Chen Jian, 'China and the First Indo-China War 1950-54'
10. Raj Kumar Sharma, 'China's Growing Influence in Central Asia - Implications for India' (2017)
11. Chietigj Bajpaee, 'China-India Regional Dimensions of the Bilateral Relationship' (2015)
12. Jean Francois Huchet and N Jayaram, 'Emergence of a Pragmatic India-China Relationship: Between Geostrategic Rivalry and Economic Competition' (2008)
13. Jean Francois Huchet and N Jayaram, 'Emergence of a Pragmatic India-China Relationship: Between Geostrategic Rivalry and Economic Competition' (2008)

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 1, Sept.-Oct., 2023
Available online : https://sijarah.com/

14. Annupurna Nautiyal and Chintamani Mahapatra, "India-China in Contemporary Era" (2014)
15. Prof. Srikanth Kondapalli , "New Directions in Indian Foreign Policy towards China" {2017}
16. Chen Jian , "China and the First Indo-China War, 1950-54"
17. Chietigj Bajpaee, 'China-India Regional Dimensions of the Bilateral Relationship' (2015)
18. ibid
19. Sonali Mittra, 'The Brahmaputra conundrum' The Hindu (December 04, 2017
20. Nilanjan Ghosh, 'China cannot rob us of Brahmapurta' (January 9, 2018)
21. Rup Narayan Das, 'India-China relation: A new paradigm' (May 2013)
22. NCERT, "The Contemporary World Politics' (2007)
23. Rup Narayan Das, 'India-China relation: A new paradigm' (May 2013)
24. Rup Narayan Das, 'India-China relation: A new paradigm' (May 2013)
25. Raj Kumar Sharma , 'China's Growing Influence in Central Asia - Implications for India'(2017)
26. Jean Francois Huchet and N Jayaram, 'Emergence of a Pragmatic India-China Relationship: Between Geostrategic Rivalry and Economic Competition' (2008)
27. Rajeshwari Pillai Rajagopalan, 'Are China-India Relations really improving' The Diplomat (March 1, 2018)
28. Minhaz Merchant, 'The cure for India-China relations' (04 August 2018)
29. Minhaz Merchant, 'The cure for India-China relations' (o4 August 2018)
30. Manoj Joshi, 'Six ways on how to improve Sino-Indian, post-Wuhan (May o2, 2o18)
31. ibid
32. Saurav Jha, 'China's Creeping Invasion of India' The Diplomat (July o6, 2o17)
33. Minhaz Merchant, 'The cure for India-China relations' (o4 August 2o18)
34. Manoj Joshi, 'Six ways on how to improve Sino-Indian, post-Wuhan (May o2, 2o18)
35. Atul Aneja, 'India shows intent to resolve Azhar issue with China to bolster "Wuhan Spirit"' The Hindu (April 22, 2o19)
36. Rup Narayan Das, 'India-China relation: A new paradigm' (May 2o13)
37. Minhaz Merchant, 'The cure for India-China relations' (o4 August 2o18)
38. Rekha Dixit, "India, China agree on '1o pillars' of cooperation to enhance cultural ties" The Week (December 21, 2o18)